अनुबोधन, खण्ड 1, अंक 4, दिसम्बर 2025, पृष्ठ 186–187
ISSN: 3049-4184 (प्रिन्ट), 3108-1185 (ऑनलाइन)
प्रकाशित: 31 दिसम्बर 2025
जर्नल वेबसाइट: https://anubodhan.org

सन्देशप्रद लघुकथा–संग्रह : सुनऽ भाई साधो!
(भोजपुरी–लघुकथाव्यंग्य समीक्षा)

डॉ. वेद प्रकाश पाण्डेय *

'सनुऽ भाई साधो!' डॉ. फूलचन्द प्रसाद गुप्त द्वारा संकलित/लिखित भोजपुरी लोककथाओं का सलीके से किया गया एक ऐसा संग्रह है, जो किसी भी सहृदय मन को मोह लेने के लिए पर्याप्त से भी अधिक है। इसमें 121 लघुकथाओं/व्यंग्यकथाओं का संकलन है, जिसका प्रकाशन 'डिस्काउण्ट ग्रुप ऑफ पब्लिकेशन, गोरखपुर' द्वारा सुरुचिपूर्वक किया गया है। इसमें प्रकाशित हिन्दी भाषा–साहित्य के आचार्य प्रो. रामदरश राय की भूमिका ने कृति के महत्त्व और गरिमा में चार चाँद लगा दिया है।

डॉ. फूलचन्द प्रसाद गुप्त भोजपुरी भाषा और साहित्य को समर्पित एक ऐसे परिश्रमी और निष्ठावान साहित्यकार हैं, जिन्होंने साहित्य की अनेक विधाओं–शोध, कविता, कहानी, निबन्ध, दोहा, समीक्षा, सम्पादन में रचनारत रहते सन्दर्भित ग्रन्थ जैसा मूल्यवान संकलन प्रस्तुत किया है। उक्त संकलन में संगृहीत/लिखित संक्षिप्त कथाएं/व्यंग्य कथाएँ पूर्वांचल में परम्परा से चली आ रही लोकमुख में बसी और वहीं से फूटी कथारस की ऐसी स्निग्ध धाराएं हैं, जो अपने पाठक के मन को न केवल सरस कर देती हैं, प्रत्युत उसके चेतना के तारों को भी झनझनाए बिना नहीं छोड़ती। वस्तुतः डॉ. गुप्त का, मन से किया गया यह कार्य, भोजपुरी भाषा को समृद्ध करने से सहृदय साहित्यकार सम्पादक के नाते, इन पंक्तियों का लेखक उनके इस महत्त्वपूर्ण कार्य/अवदान की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता।

*कृतकार्य प्राचार्य, किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कुशीनगर, संपादक, शहरनामा गोरखपुर

'सनुऽ भाई साधो!' में प्रयुक्त भाषा, शिष्ट हास्य और व्यंग्य, इसकी संक्षिप्तता और सर्वोपरि इसकी कहन (अभिव्यक्ति) के लिए डॉ. गुप्त की जितनी प्रशंसा की जायेगी– कम होगी। उनकी 121 में से अधिकांश कथाएँ बहुत सुन्दर, मार्मिक, प्रेरक और सन्देशप्रद है। कई कथाओं पर उन्हें पुरस्कार देने का मन होता है। कथा संख्या 9 में प्रयुक्त शब्द 'पालक' अपनी श्लेषात्मक शक्ति के लिए याद किया जायेगा। कथा संख्या 15 में 'दीवार' शब्द का (दीवाल का नहीं) प्रयोग करके डॉ. गुप्त ने भाषा–सम्बन्धी अपने सम्यक् ज्ञान का परिचय दिया है। इसी प्रकार कथा संख्या 19 में 'हास्य' का सफल प्रयोग और कथा संख्या 21 का सन्देश प्रभावित करता है। 25 में बाबू द्वारा सूखे नीबू से भी दो–चार बूँद रस निकलवाकर लेखक ने कमाल कर दिया है। 111 के 'गिरहस्ती कऽ मन्तर' 112 के 'सोच' 115 के 'नसेड़ी कऽ जबाब' 116 के 'बुद्धिमान लइका' 117 के 'घासि अउर भूसा' मन को कहीं बहुत गहराई में स्पर्श करके एक ऐसी भीनी झुरझुरी उत्पन्न करते हैं जो देर तक बनी रहती है।

लेखक के हौसले की बुलन्दी के लिए यह जानना आवश्यक है कि लोककथाओं, लोकगीतों, पर्व और संस्कारों से सम्बन्धित गीतों के संकलन, उनके मार्जन–पुनर्सृजन और संरक्षण–प्रकाशन का कार्य मौलिक सर्जनात्मक कार्य की भाँति अत्यन्त महत्त्व का कार्य है। इस धरती पर अनेक ऐसे चर्चित–सुख्यात कवि–लेखक हुए हैं, जिन्होंने ऐसा करके सुनाम अर्जित किया है। वे प्रशंसित–पुरस्कृत और अलंकृत किये गये हैं। मुझे आशा है कि डॉ. फूलचन्द प्रसाद गुप्त अन्य सर्जनात्मक कार्यों के साथ, इस कार्य को जारी रखेंगे।

Copyright © 2025 Siri Research Foundation. This is an open access review article distributed under the Creative Commons Attribution International License (CC BY 4.0).